Roll No.....

हिन्दी साहित्य II

This question paper contains 2 printed pages.

B.A. (Pt. II)

0019325

2102-II-A

B.A. (Part II) EXAMINATION - 2018

(For Non-Collegiate)

(10+2+3 Pattern)

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(नाटक एवं एकांकी)

Time allowed : Three hours

Maximum marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित है।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:

(क) स्त्री के सच्चे प्रेम की सीमा नहीं जानते और मृत्यु का रहस्य खोलने में व्यस्त हो। कभी मेरे रहस्य की ओर दृष्टि करते। लेकिन मकड़ी की तरह गोल जाले को बुनकर उसके बीच में बैठकर पृथ्वी की गोलाई नहीं देखी जा सकती। जुगनू के जीवन की चिनगारी से ज्वालामुखी की आग की कल्पना नहीं हो सकती। तुम कहीं समझ सके कि स्त्री की निराशा के अन्धकार में ही एक ज्वालामुखी सोता है, उसके जागने पर स्त्री को आग के सिवाय कुछ नहीं दीखता। **(2+8)**

अथवा

हाँ, माँ अपने ही हाथों से बेटे की हत्या कर रही है, पर वह जान–बूझकर कुछ नहीं करती। ममता ने उसे पागल बना दिया है। होश में आने पर वह स्वयं नहीं जानती कि वह क्या करती है। वह उसे अपना समझती है – केवल अपना। यही स्वार्थ है, यही ममता की विश है। **(2+8)**

(ख) दुनिया में कौन धोखा नहीं करता? ये बड़े–बड़े साम्राज्य, बड़े–बड़े राष्ट्र, बड़ी–बड़ी संस्थाएँ, बड़े–बड़े व्यापार ये सब क्या छल–कपट पर नहीं चलते? बड़े–बड़े नेताओं और विजेताओं की सफलता और ख्याति की नींव क्या कपट और छल पर नहीं रखी गई? रात–दिन तुम इस नारकीय स्कूल में झक–झक करते रहते हो। मेहनत करते हो, मरते हो, आँखें और दिमाग फोड़ते हो और इस सारे श्रम के बदले में तुम पाते क्या हो? इज्जत और आराम की रोटी भी तुम्हें प्राप्त नहीं, ठीक तरह से खा–पी भी तो नहीं सकते मैं कहता हूँ, – बस पी जाओ! दुनिया में धोखा वही है, जो उसकी आँखों से छिपाया न जा सके। **(2+8)**

अथवा

अखबार की दुनिया में रोज खबरें आती है। हड़तालों के नारे, लड़ाइयों का भोरगुल, सेनाओं की परेडें, जंगी जहाजों का घर्राटा, लेकिन मुझे सब इतने बेमानी, इतने खोखले लगते हैं जितने इस बचकाने खिलौने के स्वर। लेकिन कभी कभी लगता है, इन्हीं ध्वंस और विनाश की आवाजों में कहीं नये इन्सान की आवाज का भी निर्माण हो रहा है। मैंने सोचा उस आवाज को जिन्दा रखने के लिए, उसे ऊपर लाने के लिए मैं अपनी हस्ती मिटा दूँगा, वही आवाज मेरी जिन्दगी होगी। **(2+8)**

(ग) कुंती और सूर्यदेव! लोग समझते है कुंती ने ऋषि का वरदान जाँचने के लिए सूर्य भगवान की आहवान किया। जी नहीं! क्षितिज पर सवेरे की अरूणिमा भी भाँति, तेजस्वी सूर्यदेव का मादक स्वरूप, कुंती के मानस–गगन के छोर पर खिंच गया। और फिर? – जैसे पूर्व दिशा की लालिमा, मध्याह्न का जगमगाता और प्रचंड ताप बन जाती है, ठीक वैसे ही, दोनों का अनुराग, एक उत्तप्त और विश्व–व्यापी विलास बन गया। कोणार्क की युगल मूर्तियों में वही विलास बिखरा पड़ा है – उद्दाम यौवन का वेग, उत्तानशृंगार का उल्लास! ..... और फिर **(2+8)**

अथवा

तुम शिल्पी विशु के पुत्र हो, धर्मा! कोणार्क और किसी के स्पर्श से कैसे जग सकता था? जैसे मरूस्थल में कहीं निर्झरिणी सहसा गायब हो जाने पर भी अन्यत्र बह निकलती है, वैसे की मेरी भटकी हुई प्रतिमा तुम्हारे मन में विकस उठी, धर्मा! सैकड़ों, हजारों बरसों तक कोणार्क के उन्नत शिखर को देखकर लोग कहेंगे कि यह विशु और उसके बेटे की कला की सर्वोत्कृष्ट कृति है। मेरे–जैसा भाग्यशाली पिता आज उत्कल में और कौन है? **(2+8)**

(घ) वह सारे जीवन का प्रतिबिम्ब है। देखो हमारे कोणार्क देवालय को आँखें भरकर देखो। यह मन्दिर नहीं सारे जीवन की गति का रूपक है। हमने जो मूर्तियाँ, इसके स्तम्भों, इसकी उपपीठ और अधिस्थान में अंकित की है उन्हें ध्यान से देखो। देखते हो, उनमें मनुष्य के सारे कर्म, उसकी सारी वासनाएँ, मनोरंजन और मुद्राएँ चित्रित है। यही तो जीवन है। **(2+8)**

अथवा

कैसी अद्भुत थी मेरी माँ! ..... आँधियों के निर्दय झकझोर से भी न झुकने वाले तालवृक्ष की तरह। मुझे गोदी में लिये, बहुत पहले, जब वह नगर में आयी थी, तो कौन उसका सहायक था? मजदूरी करके, गरीबी के कष्ट और वैभव के अपमान सहकर, उसने मुझे पाला। **(2+8)**

2. 'ताँबे के कीड़े' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुये, एकांकी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिये। **(15)**

अथवा

'काल पुरूष और अजन्ता की नर्तकी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिये। **(15)**

3. 'हरी घास पर घण्टे भर' एकांकी में "दाम्पत्य जीवन' के तीन चित्रों को उनकी मानसिकता पर यथार्थ शिल्प में चित्रित किया गया है।" स्पष्ट कीजिये। **(15)**

अथवा

'ममता का विश' एकांकी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिये। **(15)**

4. जगदीश चन्द्र माथुर के नाटक 'कोणार्क' का उददेश्य स्पष्ट कीजिये। **(15)**

अथवा

'कोणार्क' नाटक का नायक कौन है? उसकी क्या चारित्रिक विशेषताएं है? स्पष्ट कीजिये। **(15)**

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिये। **(15)**

(i) नाटक और एकांकी में अन्तर

(ii) एकांकी के तत्व

(iii) समस्या नाटक से तात्पर्य

(iv) नाटककार मोहन राकेश **(2x7½)**